Prof. Khushbu kumari,
Guest Teacher
Dept. of Political science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani (Lnmu)

Class - B.A - I (H)
Paper - II

Topic - महात्मा गांधी (सत्य और अहिंसा)

सत्य :—

महात्मा गांधी के दर्शन का मूल आधार सत्य एवं अहिंसा संबंधी उनकी विचारधारा रही है गांधीजी के लिए सत्य, ईश्वर है और जो व्यक्ति दूसरे को कष्ट पहुंचाना है, वह सत्य का उल्लंघन करता है, हिंसा असत्य है, क्योंकि वह जीवन की एकता और पवित्रता के विरुद्ध है, इसलिए जीवन में अहिंसा का पालन करना सत्य के उपासक का सबसे बड़ा कर्तव्य है। सत्य और अहिंसा की धारणा को गांधीजी ने एक व्यापक अर्थ दिया और एक व्यापक स्तर पर उनका प्रयोग किया।

सत्य क्या है, इसके उत्तर में गांधीजी ने कहा था, "यह एक बड़ा कठिन प्रश्न है किन्तु स्वयं अपने लिए मैंने इसे हल कर लिया है। तुम्हारी अन्तरात्मा जो कहती है, वही सत्य है।" पर सत्य को ग्रहण कर उसे व्यक्त करने के लिए अन्तरात्मा शुद्ध होनी चाहिए, क्योंकि शुद्ध अन्तरात्मा की वाणी ही सत्य हो सकती है। अन्तरात्मा की शुद्धि के लिए साधना की आवश्यकता होती है और यह साधना जीवन में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को अपनाकर ही की जा सकती है। गांधीजी का विचार था कि देहधारियों के लिए पूर्ण सत्य की प्राप्ति सम्भव नहीं है, क्योंकि मानव आत्म-शुद्धि के इन साधनों को पूर्ण रूप में नहीं अपना सकता है, फिर भी उनका मत था कि उन साधन द्वारा

Scanned with CamScanner

व्यक्ति सत्य की ओर अग्रसर हो सकता है।

अहिंसा :—

गांधीजी अहिंसा को मानव का प्राकृतिक गुण मानते थे और उनका विचार था कि मनुष्य स्वभावतः अहिंसाप्रिय है तथा वह परिस्थितिवश ही हिंसावान बनता है। गांधीजी के अनुसार अहिंसा का अर्थ केवल हत्या न करना ही नहीं है, बल्कि अहिंसा से उनका तात्पर्य अन्य किसी प्रकार से भी अपने विरोधी को कष्ट न पहुंचाना है। इसके साथ ही अहिंसा किसी भी रूप और किसी भी परिस्थिति में बुराई या अत्याचार को सहन करने या उसके समक्ष समर्पण करने का आदेश नहीं देती, बल्कि इसके द्वारा तो बुराई का आध्यात्मिक बल के आधार पर प्रतिरोध का आदेश दिया जाता है। स्वयं गांधीजी के शब्दों में "अहिंसा का तात्पर्य अत्याचारी के प्रति नम्रतापूर्ण समर्पण नहीं है, बल्कि इसका तात्पर्य अत्याचारी की मनमानी इच्छा का आत्मिक बल के आधार पर प्रतिरोध करना है।"

गांधीजी का अहिंसा में दृढ़ विश्वास था और उन्होंने अहिंसा की तीन निम्न अवस्थाएं बतलायी हैं—

(1) जागृत अहिंसा — इसे अहिंसा का सर्वोत्कृष्ट रूप कहा जा सकता है और यह साधन-सम्पन्न या बहादुर व्यक्ति की अहिंसा है। अहिंसा के इस रूप का

Scanned with CamScanner

दुर्बल आवश्यकता के कारण नहीं, बल्कि नैतिक धारणाओं पर दृढ़ आस्था के आधार पर ही अपनाया जा सकता है। जाग्रत अहिंसा में पूर्ण शक्ति से प्रहार करने की क्षमता रहती है किन्तु वह इसका इच्छुक नहीं होता। अहिंसा के इस रूप को केवल राजनीतिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों में दृढ़ता के साथ अपनाया जाना चाहिए।

(2) औचित्यपूर्ण अहिंसा — अहिंसा के इस रूप को जीवन के क्षेत्र में किसी विशेष आवश्यकता के पड़ने पर औचित्यानुसार एक नीति के रूप में अपनाया जाता है। यह निर्बल व्यक्तियों की अहिंसा या असहाय व्यक्तियों का निष्क्रिय प्रतिरोध होती है। इसमें नैतिक विश्वास के कारण नहीं, वरन् निर्बलता के कारण ही हिंसा का प्रयोग किया जाता है। फिर भी यदि ईमानदारी, साहस और सावधानीपूर्वक एक नीति के रूप में अपनाया जाय, तो इससे कुछ सीमा तक वांछित लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। लेकिन यह जाग्रत अहिंसा के समान प्रभावशाली नहीं हो सकती है।

(3) भीरुओं की अहिंसा — कई बार कायर और डरपोक व्यक्ति अहिंसा के कुएं पर चलने की बात करते हैं, लेकिन इनकी इस प्रवृत्ति को अहिंसा नहीं बल्कि डरपोक और कायर व्यक्तियों की निष्क्रिय हिंसा कहा जाना चाहिए। डरपोक संकट का सामना करने की अपेक्षा उससे भाग जाता है

Ajanta PRODUCTS
Page No.
Date

जो कि नितान्त अमानवीय, अधार्मिक और अपमानजनक है। गांधीजी के अनुसार "यदि हमारे हृदय में हिंसा भरी है तो हम अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए अहिंसा का आवरण पहने, इससे हिंसक होना अधिक अच्छा है।"

Khushbu Kumari

Scanned with CamScanner